सदा उपराम और साक्षी अवस्था

सन्तरी दादी जी

सन्तरी दादी जी,
ब्रह्मा बाबा के भतीजे
दादा विश्वकिशोर जी की
धर्मपत्नी थीं।
वे ईश्वरीय सेवा अर्थ
निर्मलशान्ता दादी जी
के साथ
कोलकाता में
रहती थीं।
दादी सन्तरी जी ने
13 दिसम्बर,
1990, सतगुरुवार
अमृतवेले लगभग
चार बजे
मुधबन में
योग करते-करते
पुरानी काया
छोड़ी।

ब्रह्माकुमारी सत्यवती बहन जो आसाम के तिनसुकिया सेवाकेन्द्र की निमित्त संचालिका हैं, सन्तरी दादी जी के साथ कोलकाता में लगभग छह सालों तक रहीं। उन्होंने दादी सन्तरी जी में क्या देखा, उसका वर्णन इस प्रकार करती हैं:-

बाबा के प्रति बहुत आदर और श्रद्धा थी

सन्तरी दादी मधुबन में जब रहती थी तब वे बाबा के बहुत समीप रहती थीं। बाबा के समीप रहने के कारण उनमें बाबा के प्रति बहुत आदर और श्रद्धा थी। वे बाबा की बहुत आज्ञाकारी, विनम्र और विश्वस्त बच्ची थीं। बाबा के प्रति सन्तरी दादी में इतना सम्मान और निश्चय था कि उसको मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती। यज्ञ के प्रति या बाबा के प्रति उनमें इतनी सच्चाई और सफ़ाई थी कि किसी भी बात को कभी भी बाबा से नहीं छिपाती थी। बाबा की हर बात को सत्गुरु की आज्ञा समझकर उसकी पूरी पालना करती थीं। उनमें बाबा की बात समझने की शक्ति इतनी थी कि जब भी बाबा कहते थे कि सन्तरू बच्ची, फलानी बच्ची के लिए सौग़ात ले आओ, बाबा उसको शिव बाबा की याद सौग़ात देंगे, तो सन्तरी दादी ऐसी सौगात ले आती थी कि उसको देखकर बाबा भी ख़ुश हो जाते थे और लेने वाली आत्मा भी ख़ुश हो जाती थी।

मैं उनके साथ मधुबन में भी रही और कोलकात्ता में भी रही। उनकी और एक विशेषता थी कि यज्ञ की कोई भी चीज़ का नुक़सान अथवा व्यर्थ इस्तेमाल उनको बिल्कुल पसन्द नहीं आता था। जिस चीज़ की, जिस स्थान पर जितनी ज़रूरत है उतना ही वे इस्तेमाल करती थीं। यज्ञ के प्रति उनका इतना स्नेह था जैसे कि यज्ञ उनके दिल का टुकड़ा हो। मैंने देखा, सीजन का कोई भी फल जब सेन्टर पर आता था तो उसका सबसे पहले वे बाबा को भोग लगाती थीं, उसके बाद दूसरों को खिलाती थीं। भोग लगाये बिना कोई भी चीज़ न स्वयं खाती थीं और न दूसरों को खाने देती थीं।

उनके संस्कार बहुत रॉयल थे

उनका हर कार्य बहुत एक्यूरेट होता था। उनके हर कर्म में शालीनता और सभ्यता होती थी। वे अपनी कोई भी चीज़: रूमाल हो, नेपकिन हो इधर-उधर नहीं रखती थी। जो चीज़ जहाँ रखनी है, यथास्थान पर रखती थीं। छोटी बातों के प्रति भी वे बेपरवाह नहीं थीं। वे हमें यह भी सिखाती थीं कि जो चीज़

जहाँ से लेते हैं, काम पूरे होने के बाद उसे निश्चित स्थान पर रखना है। वे ख़ुद भी ऐसे करती थीं। जब वे मधुबन में सौग़ातों की चीज़ें संभालती थीं तो उन चीज़ों की सेटिंग को देखकर किसी को भी लगता था कि वे बहुत रॉयल और ऊँच स्वभाव-संस्कार वाली हैं। मैंने कभी उनके कमरे में कपड़े आदि इधर-उधर पड़े हुए नहीं देखे। अगर किसी दूसरी बहन का सामान भी ऐसा-वैसा पड़ा होता तो उसको भी समझाती थीं कि अगर बाबा ने इसको देखा होता तो अवश्य आपको शिक्षा दी होती कि आपको इन चीज़ों को ठीक प्रकार से एवं उचित स्थान पर रखना चाहिए। साथ-साथ बाबा के महावाक्य भी सुनाती थीं कि बाबा कहते थे कि बच्चे, तुम राजघराने के हो, राजा-महाराजा बनने वाले हो इसलिए तुम्हारे में रॉयल्टी और दैवी मैनर्स होने चाहिएँ।

हर परिस्थिति में वे एकरस अवस्था में रहती थीं

वे समय की बहुत कदर रखती थी। जो कार्य जिस समय पूरा करना है, उस समय के अन्दर पूरा करती थीं। साकार बाबा के अव्यक्त होने के बाद अव्यक्त बापदादा, गुलजार दादी के तन का आधार लेने से पहले सन्तरी दादी के तन में आते थे। सन्तरी दादी वैसे तो सन्देशी भी थीं, वे सेकण्ड में वतन में जाती थीं। सन् 1971 तक वे मधुबन में रहीं और उसके बाद उनको कोलकाता निर्मलशान्ता दीदी के पास भेजा गया। कोलकाता में उन्होंने, सेन्टर पर रहने वाली कन्याओं और क्लास में आने वाले विद्यार्थियों की एक अनुभवी माँ के रूप में पालना की। तबीयत ख़राब होने पर भी उन्होंने किसी से ज़्यादा सेवा नहीं ली और ख़ुद भी परेशान नहीं रहीं। सबसे बड़ी बात उनमें मैंने यह देखी कि हर परिस्थिति में वे एकरस अवस्था में रहती थीं। जब विश्वकिशोर भाऊ ने शरीर छोड़ा, उस समय भी उनके मन में मैंने कोई हलचल नहीं देखी। एकदम योगयुक्त और साक्षी अवस्था में थीं।

जब वे मधुबन से कोलकाता गयीं, तब वे निर्मलशान्ता दीदी की सहयोगी बनकर रहीं। विशेषकर वे स्टॉक संभालती थीं। मेहमानों के लिए टोली बनवाना और उनको खिलाना, भोजन आदि का प्रबन्ध करना एवं उनकी देखरेख करना, ये उनकी सेवायें थीं। उनका स्वभाव बहुत शान्त और धैर्य वाला था इसलिए क्लास में आने वाली मातायें, भाई उनसे समस्या के लिए समाधान प्राप्त करते रहते थे। वे शान्ति एवं आराम से, उनको साथ बिठाकर शिक्षा, सावधानी अथवा समाधान बताती थीं। स्नेह और शान्त स्वभाव के कारण सब उनमें माँ का रूप देखते थे और उनके साथ अपना समय बिताते थे।

अलौकिक पालना

क्लास में आने वाले सभी भाई-बहनों को वे ऐसी पालना देती थीं कि सहयोगी भी बाबा के वारिस बन जाते थे और उनमें यज्ञ के प्रति स्नेह और ज़िम्मेवारी की भावना जाग्रत हो जाती थीं। क्लास में आने वाला स्टूडेण्ट भी यह समझता था कि सिर्फ़ लौकिक घर ही मेरा नहीं है बल्कि बाबा का घर, मधुबन महायज्ञ भी मेरा है और उसके प्रति मेरी भी कुछ ज़िम्मेवारियाँ हैं। उनकी पालना में एक तरह का अलौकिक अपनापन रहता था इसलिए आने वाले जिज्ञासुओं में बाबा के प्रति निश्चय जल्दी बैठ जाता था।

एकॉनामी का संस्कार

सन्तरी दादी में कम ख़र्चा बालानशीन का संस्कार बहुत सशक्त था। जब भी ब्रह्मा भोजन बनाना होता था तो उसके लिए सामान, दुकान से पहले ही नहीं मँगाती थीं। क्लास में आने वाली मातायें, भाई जो सामान लाकर देते थे, उनको देखने के बाद ही आवश्यक सामानों को मँगाती थीं। उनमें एकॉनामी का

संस्कार बहुत था। उनकी कोशिश यही रहती थी कि ख़रीददारी न हो या कम से कम हो। कोलकाता की भंडारी को भी वे ही संभालती थीं। मधुबन यज्ञ के लिए बहुत-सी चीज़ें जैसे कि कपड़े एवं अन्य सामान की ख़रीददारी भी कोलकाता से ही होती थी। वह सेवा सन्तरी दादी ही करती थीं।

फलों की सीजन जब आती थी, तब साकार बाबा के पसन्द के जो भी फल होते थे, उनको सबसे पहले ख़रीद करके बाबा के लिए भेजती थीं। यज्ञ के प्रति और बाबा के प्रति उनके मन में बहुत स्नेह और समर्पण की भावना थी। मैंने देखा कि उनके हाव-भाव, चाल-चलन, बातचीत से कभी यह नहीं लगता था कि वे बाबा की लौकिक रिश्तेदार हैं। हमेशा बाबा के प्रति और यज्ञ के प्रति उनमें मैंने श्रद्धा और त्याग की भावना ही देखी।

नष्टमोहा स्मृतिस्वरूपा

जब विश्वकिशोर भाऊ का ऑपरेशन होने वाला था तब बाबा को मुंबई से फोन आया था। बाबा ने सन्तरी दादी को बुलाकर समाचार सुनाया और कहा, मुंबई जाओगी नाह्न! उन्होंने कहा, जी बाबा। उनके चेहरे से मुझे यह नहीं लग रहा था कि वे पति की सेवा करने या पति को देखने जा रही हैं। उनकी शान्तमुद्रा से मुझे यही लग रहा था कि वे बाबा की आज्ञा पालनार्थ जा रही हैं। उनमें सूक्ष्म में भी कोई हलचल नहीं देखी। वे हर तरह से सर्व लौकिक सम्बन्धियों से नष्टोमोहा थीं। इसका मैंने कई बार अनुभव किया है।

वे बहुत सादा जीवन बिताती थीं। खाने-पीने-पहनने में भी कोई आसक्ति नहीं थी। यज्ञ से जो वस्तु मिलती थी, उसी का केवल प्रयोग करती थीं। उनके कपड़े भी कोई ऊँचे दर्जे के नहीं होते थे, वही साधारण सूती साड़ियाँ। कपड़ों को वे बहुत ध्यान से संभालती थीं। उनको कहीं दाग़ लगने नहीं देती थीं। वे सफ़ाई को बहुत महत्त्व देती थीं। उनका हरेक काम परफेक्ट और एक्यूरेट होता था।

बाबा का भी उन पर बहुत फेथ था

जब वे मधुबन में रहती थीं तब बाबा उनसे कहते थे कि बच्ची, फलानी बच्ची का ध्यान रखना। तो सन्तरी दादी उस बहन या भाई के पास जाकर रोज़ पूछती थी कि आपको कोई चीज़ की ज़रूरत हैह्न? बताओ, आपको क्या चाहिए ऐसे वे किसी को किसी चीज़ की ज़रूरत है तो तुरन्त ले जाकर दे देती थी या उसकी ख़टिया पर रख देती थी। बाबा को भी सन्तरी दादी पर बहुत फेथ था।

प्रश्नः क्या वे क्लास कराती थी?

उत्तरः मुरली तो नहीं सुनाती थी लेकिन अमृतवेले का योग पूरा होने के बाद बहनें उनके सामने बैठ जाती थीं तो कुछ-न-कुछ अनुभव की बातें, ज्ञान की बातें, योग की बातें, धारणा की बातें सुनाती थीं। सप्ताह में एक बार माताओं की क्लास कराती थीं। अपने अनुभव और यज्ञ-इतिहास सुनाकर उनको हल्का कर देती थी।

प्रश्नः उनका व्यक्तिगत पुरुषार्थ कैसा था?

उत्तरः अमृतवेले योग का उनका टाइम एकदम एक्यूरेट था। साढ़े तीन बजे उठती थीं, उसके बाद योग में जाती थीं। योग के बाद स्नान आदि करके अपने लिए मुरली का अध्ययन करती थीं। इन सब के लिए उनका टाइम एकदम फिक्स था। किसी बात पर शान्ति से ही अपना विचार देती थीं।

प्रश्नः शिव बाबा के प्रति उनका क्या भाव होता थाह्न? शिव बाबा को वे किस रूप में ज़्यादा याद करती थीं अथवा सम्बन्ध रखती थीं?

उत्तरः उनसे तो मैंने पूछा नहीं है लेकिन उनके हाव-भाव से मुझे लगता था कि शिव बाबा के प्रति

उनका बहुत श्रद्धा भाव था। उनके व्यवहार से लगता था कि वे शिव बाबा को सद्गुरु और पति के रूप में ज़्यादा याद करती थीं। क्योंकि जैसे भक्तिमार्ग में गुरु की आज्ञा से हर कार्य किया जाता है। वैसे ही जब कोई भी खाने-पीने की चीज़ सेन्टर पर आती थी अथवा कोई जिज्ञासु दे जाते थे तो सबसे पहले शिव बाबा को भोग लगाती थीं। इसके बाद ही सभी को खाने के लिए देती थीं। शिव बाबा को वे गुरुओं के गुरु, पतियों के पति और पिताओं के पिता समझकर याद करती थी और चलती थी। उनका न किसी बहन से लगाव था और न किसी से बहुत स्नेह। सदा उपराम और साक्षी होकर रहने की अवस्था उनकी मैंने देखी।

बाबा, सन्तरी दादी और मम्मा

प्रश्न: खाने-पीने में उनको क्या पसन्द था?

उत्तर: खाने-पीने में वे बहुत नाजुक थीं। उनको हर चीज़ पसन्द नहीं आती थी। वे बहुत कम खाती थीं। ऐसी-वैसी सब्जी नहीं खाती थीं। उनको स्वच्छता बहुत पसन्द थी इसलिए स्वच्छता से खाना बनाना पसन्द करती और उसी का सेवन करती थी। उदाहरण के तौर पर, अगर भोग के बर्तन में थोड़ा-सा कहीं दाग़ दिखायी पड़ जाता तो वे उसमें भोग नहीं लगाती थीं। भोग की टेबल हो या भोजन की टेबल हो उसमें कहीं कुछ गंदगी हो तो उसको वे इस्तेमाल नहीं करती थीं। अच्छी तरह सफ़ाई करके उसका उपयोग करती थीं। इस तरह उनको स्वच्छता बहुत पसन्द थी। हिसाब-किताब में तो वे एकदम एक्यूरेट थीं। एक पैसे का भी फ़रक नहीं होता था। हिसाब के बारे में वे कभी कोई समझौता नहीं करती थी। हिसाब माना हिसाब, एक्यूरेट। कोई प्रकार का नुक़सान उनको बिल्कुल पसन्द नहीं था। यज्ञ की हर वस्तु का सही इस्तेमाल होना चाहिएह्नह्न यह उनकी प्रबल इच्छा होती थी।

वे हमें यही शिक्षा देती थीं कि अगर भगवान बाप को ख़ुश करना चाहते हैं तो सबसे पहले, हर चीज़ की सफ़ाई रखो, दूसरा, हिसाब-किताब में ईमानदार रहो। तीसरा, यज्ञ की किसी चीज़ का नुक़सान नहीं करो या उसका दुरुपयोग नहीं करो।

प्रश्न: क्या आप लोगों को पता पड़ रहा था कि वे शरीर छोड़ने वाली हैं?

उत्तर: नहीं, कभी किसी को संकल्प तक नहीं आया। हाँ, उनको दमे की बीमारी थी। दिन प्रति दिन कमज़ोर होती जा रही थीं लेकिन किसी ने यह नहीं सोचा था कि वे इतनी जल्दी शरीर त्याग देंगी। अन्तिम घड़ी तक वे अमृतवेले उठकर बाबा की याद में रहीं। उन्होंने कभी किसी से व्यक्तिगत सेवा नहीं ली। अपने लिए सेवा लेने का संस्कार उनमें नहीं था। उनकी नींद इतनी हल्की थी कि समझो, वे पलंग पर सोयी हैं और कोई वहाँ से धीरे-धीरे भी चला गया तो भी उनकी आँखें ख़ुल जाती थीं। वे सोते हुए भी जाग्रत रहती थीं। वे कभी जास्ती समय बिस्तर पर नहीं रहीं। अन्तिम दिनों में कोलकाता से मधुबन आयी थीं। रोज़ की तरह अमृतवेले योग कर रही थी, योग करते-करते ही उन्होंने शरीर छोड़ दिया।